प्रियंवदा

ई-मेल:priyamvda@gmail.com

बदले तेवर

"शर्मा जी, मुझे 10-15 दिनों के लिए कुछ पैसों की सख्त जरूरत है। आप चाहें तो मुझसे ब्याज ले लें या एग्रीमेंट साइन करवा लें। मैं समय पर पैसे लौटा दूँगा, मेरा विश्वास करें। मेरा परिवार सड़क पर आ जाएगा यदि आज पैसों का इन्तजाम नहीं हुआ!" गुनिया बाबू की आँखें बेबसी से नम होने लगी थीं।

शर्मा जी ने दयालुता दिखाते हुए बड़ी विनम्रता से कहा, "गुनिया जी! इंसानियत नाम की भी कोई चीज होती है दुनिया में। ब्याज की या एग्रीमेंट की जरूरत नहीं है। आखिर बुरे समय में इंसान ही इंसान के काम आता है। मैंने भी पैसे अपने किसी बहुत ही जरूरी काम के लिए रखें हैं। लेकिन अगर आपके परिवार पर संकट की बात है तो आप ले लीजिए, लेकिन 15 दिन के बाद अवश्य लौटा दें क्योंकि मुझे भी इनकी बहुत आवश्यकता है।" गुनिया बाबू ने पैसों की और शर्मा जी की वंदना करके धन्यवाद किया।

अपने आलीशान घर में तख्तपोश पर शान से बैठे काजू बादाम का भोग लगा रहे गुनिया बाबू से शर्मा जी ने पैसे लौटाने का आग्रह किया।

"शर्मा जी! लौटाने के लिए तो मेरे पास अभी पैसे नहीं है।" कहते हुए काजू, किशमिश और बादाम मुँह में ठूँस लिए।

"भई! हमें भी जरूरत है पैसों की। आपने 10-15 दिन में लौटा देंगे कहकर पैसे लिए थे, आज पूरा एक महीना 15 दिन हो गए हैं। अब तो लौटा दीजिए।" तल्खी शर्मा जी की जुबान पर अनायास ही आ गई।

"समय सीमा का कोई एग्रीमेंट हुआ था क्या? जब होंगे तब लौटा दूँगा। मुझे कौन-सा ब्याज पड़ रहा है?" बदले तेवर के साथ आँखों से बेशर्मी रंग साफ दिखाकर काजू बादाम-किशमिश मुट्ठी भरकर फिर से गुनिया बाबू ने मुँह में ठूँस लिए।

जलन

मिसेज शर्मा ने अपने शालीन पहनावे, व्यवहार और योग्यता के कारण लोगों के दिलो–दिमाग में अच्छी खासी जगह बनाई है पर उनसे जलने–भुनने वालों की कोई कमी नहीं।

मिसेज शर्मा का लेख अखबार में छपा तो लेख पर सकारात्मक चर्चा का समाँ बँधा और बधाई देने वालों का ताँता लग गया। श्रीमती धीमान होंठों पर मुस्कान लिए हुए तंज कसते हुए अंदाज में कहने लगीं— "मिसेज शर्मा! बधाई हो। अरे भई, माना घोड़ा तेज भाग सकता है लेकिन गधे को भी तो कम नहीं आँका जाना चाहिए।"

वे ईर्ष्या और द्वेष के चाबुक से अपनी गधागाड़ी हाँकने के प्रयास में होंठों की मुस्कान और शब्दों की अभिव्यक्ति में चाहकर भी तालमेल नहीं बिठा पाई। उनकी समर्थक श्रीमती ठाकुर ने तुरंत हमदर्दी का टॉनिक पिलाकर उनके शब्दों को पुष्ट करते हुए कहा— "अब देखिए न...यूँ तो मिसेज धीमान भी अच्छा बोलती हैं, लिखती भी हैं; ये अलग बात है कि अभी तक कहीं छपी नहीं...s...s...। लेकिन वही है न.... कि भले ही गधा कितना भी बोझा उठा ले, तारीफ होती है.... हमेशा...s...s...घोड़े की ही होती है। खैर! मिसेज शर्मा! बधाई हो ।"

शब्दों से कोई किला फतेह करने जैसी व्यंग्यात्मक मुस्कान दोनों के चेहरों पर तैरने लगी। मिसेज शर्मा के चेहरे पर हमेशा एक नैसर्गिक मुस्कान रहती है। दोनों के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान के भाव को प्रदर्शित करते हुए अपने चिरपरिचित अंदाज में कहा, "अपना सम्मान चाहने वाले दूसरों को भी सम्मान देना जानते हैं । मैं आपके बधाई देने के अंदाज का दिल से आदर करती हूँ । वैसे... मिसेज धीमान! हम अगर अपनी कुंठा का हल दूसरों में न ढूँढकर खुद में ही ढूँढें तो किस्मत के बंद दरवाजे खोल सकते हैं।" कहते हुए मिसेज शर्मा ने धीरे से मिसेज धीमान का हाथ दबा दिया। धीमान एंड कम्पनी मुँह फुलाए एक दूसरे को कनखियों से देखने लगी ।